डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

प्रेस विज्ञप्ति (निःशुल्क प्रकाशनार्थ) दिनांक 05.10.2017

वाल्मीकि जयन्ती की पूर्व संध्या पर आयोजित हुआ 'श्री राम काव्यांजलि' समारोह

डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद तथा दीन दयाल उपाध्याय इन्टरनेशनल फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 04.10.2017 को सांय 7:00 बजे से विश्वविद्यालय के विवेकानन्द प्रेक्षागृह में 'श्रीराम काव्यांजलि' समारोह के अन्तर्गत श्रीराम आधारित एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

कवि सम्मेलन का शुभारम्भ समारोह की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप–प्रज्ज्वलन कर किया। रंग महल के महन्त श्री रामशरण जी महाराज तथा मानस मर्मज्ञ सुश्री सुनीता शास्त्री के आशीर्वचनों तथा आदि कवि श्री वाल्मीकि जी के सन्दर्भ में आधार वक्तव्यों के पश्चात दीन दयाल उपाध्याय इण्टरनेशनल फाउण्डेशन के प्रबन्ध न्यासी श्री राकेश मंजुल ने मंचस्थ कवियों का परिचय कराते हुए उनका स्वागत किया। सुश्री सुनीता शास्त्री ने कहा कि प्रथम ज्ञात श्लोक या काव्य–व्यंजना का जनक महर्षि वाल्मीकि जी को माना जाता है। अयोध्या के श्रीराम कोट के महन्त श्री रामशरण दास जी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि श्रीराम के माध्यम से भारतीय संस्कृति को तमाम गौरवान्वित किये जाने वाले अवसरों की प्राप्ति हुई है।

कुलपति प्रो0 दीक्षित ने मंचस्थ कवियों को अंगवस्त्र एवं स्मृति–चिन्ह प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया।

लगभग रात 11:00 बजे तक चली इस काव्य–संध्या में वाहिद अली 'वाहिद', श्रीमती व्याख्या मिश्रा, हसन रायबरेलवी, रामकिशोर तिवारी, शरत त्रिपाठी, अशोक टाटम्बरी, करूणेश तथा प्रो0 आलोक मणि त्रिपाठी ने श्रीराम के व्यक्तित्व एवं जीवन–चरित्र पर आधारित स्वरचित कविताओं का सस्वर पाठ किया। श्रीराम पर आधारित इस काव्यांजलि समारोह का संचालन डॉ0 संतोष अवस्थी ने किया।

कवि रामकिशोर तिवारी ने 'त्रेता के युग की कहानी, बहुतै पुरानी हो' नामक रचित सोहर के साथ–साथ रामराज्य की महिमा को वर्णित करती कजरी का भी सस्वर पाठ किया। कवि श्री करूणेश जी ने 'प्रभुपद पंकज जिन्हें नमत सबजन' मुखड़े से सुसज्जित स्वरचित कविता का पाठ किया और काव्य पाठ के दौरान कैकेयी और श्रीराम के मध्य संवाद को भी वर्णित किया।

लखनऊ के कवि श्री वाहिद अली 'वाहिद' ने 'राम का नाम सुनाम सदा, पुरूषोत्तम सत्य सनातन हैं' मुखड़े से सुसज्जित अपनी कविता में भारतीय संस्कृति की गंगा–जमुनी तहज़ीब और सामाजिक समरसता के विभिन्न आयामों का भी मिश्रण किया। कवियत्री व्याख्या मिश्रा ने महर्षि वाल्मीकि को समर्पित करते हुए एक स्वरचित कविता पढ़ी जिसका मुखड़ा कुछ इस प्रकार है– 'नज़र से जब उम्मीदों के सितारे टूट जाते हैं, महर्षि वाल्मीकि उसे थाम लेते हैं जो बेसहारे होते हैं'। साथ ही कवियत्री ने सीता के गुणों के बखान के साथ–साथ नारी शक्ति की महानता को भी अपनी काव्य–व्यंजनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया।

उर्दू के प्रतिष्ठित शायर हसन रायबरेलवी ने क्रमागत रूप से रामकथा और मानस पाठ को रेखांकित करती स्वरचित कविताओं का पाठ किया। हसन जी की कविताओं 'कहानी उसकी जहाँ को सुनाई जाती है कि जिसकी रामकथा गुनगुनाई जाती है' तथा 'थकन को दूर करो अपने मन को बहलाओ, जरा सी देर को मानस की छाँव में आ जाओ' के प्रस्तुतीकरण पर पूरा सभागार देर तक मुग्ध होकर तालियाँ बजाता रहा।

कवि रामकिशोर त्रिपाठी ने अपनी कविता 'उस महाकवि प्रथम कवि का वन्दन, करैं तन सुआसित करे मन को चन्दन' के माध्यम से आदि कवि श्री वाल्मीकि को श्रद्धांजलि देते हुए उनके सन्दर्भ में तमाम स्वरचित प्रेरणादायक पंक्तियों का पाठ किया।

काव्यांजलि समारोह के अन्त में कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने दीन दयाल उपाध्याय इण्टरनेशनल फाउण्डेशन को धन्यवाद देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का एक भी पैसा खर्च कराये बगैर फाउण्डेशन ने अयोध्या की धरती पर महर्षि वाल्मीकि को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जिस स्तर का काव्य पाठ आयोजित किया वह प्रत्येक दृष्टि से प्रशंसनीय है। कुलपति प्रो0 दीक्षित ने कहा कि आदि कवि महर्षि वाल्मीकि को हमारे इतिहास में जो स्थान प्राप्त होना चाहिए था वह अभी भी उन्हें नहीं मिला है इसलिए विश्वविद्यालयों को आदि कवि की रचनाओं एवं उनके कृतित्व व व्यक्तित्व पर शोध किये जाने की दिशा में सार्थक पहल करना चाहिए।

नोट– फोटो संलग्न।

मीडिया प्रभारी